अध्याय 7

भारतीय गणतंत्र की स्थापना

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद इंग्लैंड यह समझ चुका था कि अब भारत में उसका राज नहीं चलेगा। इसलिए वहाँ के तत्कालीन प्रधानमंत्री एटली को 1946 ई. में घोषणा करना पड़ा कि वे जल्दी ही भारत छोड़ना चाहते हैं। फिर उन्होंने सत्ता हस्तांतरण के संबंध में भारतीय नेताओं से बातचीत करने का विचार किया। उन्होंने अपने केबिनेट के तीन मंत्रियों को अंतरिम सरकार बनाने और संविधान गठित करने का प्रस्ताव रखा। प्रस्ताव में कहा गया कि संविधान सभा में प्रांतीय विधान सभाओं द्वारा चुने हुए व्यक्ति और भारतीय रियासतों के राजाओं द्वारा मनोनीत व्यक्ति शामिल होंगे। इसे केबिनेट मिशन कहते हैं।

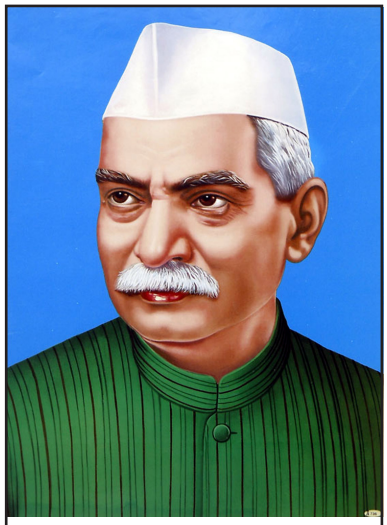

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

अंतरिम सरकार की स्थापना –

इस प्रकार वायसराय लार्ड वेवेल के आमंत्रण पर केंद्र में पं. जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में एक अंतरिम सरकार 1946 ई. में बनी। इसके अलावा डॉ. राजेन्द्र

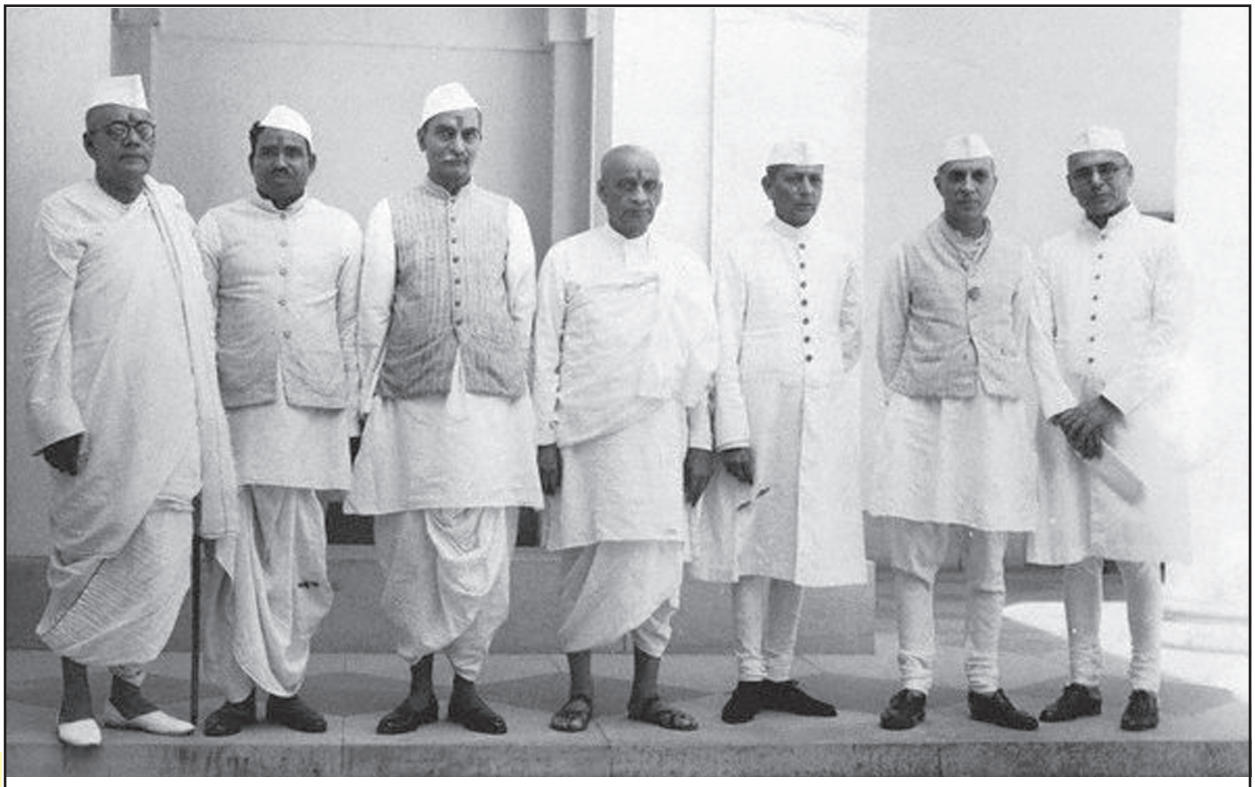

अंतरिम सरकार के सदस्य

प्रसाद की अध्यक्षता में संविधान सभा का गठन हुआ, जिसने दिसम्बर 1946 ई. में अपना काम शुरू कर दिया। लेकिन मुस्लिम लीग तथा राजाओं ने उसमें भाग नहीं लिया था।

लीग द्वारा पाकिस्तान की माँग –

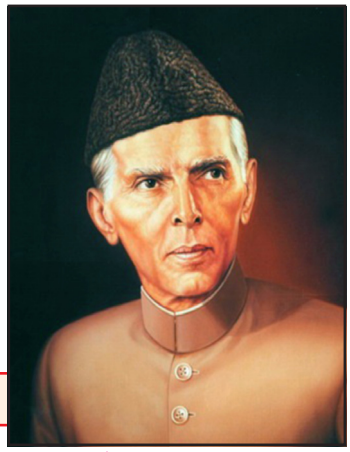

मोहम्मद अली जिन्ना

मुस्लिम लीग पृथक पाकिस्तान की माँग पर अड़ी हुई थी। लेकिन कॉंग्रेस शुरू से ही भारत का विभाजन नहीं चाहती थी। किंतु लीग अपनी माँग पर जोर देने लगी। वह पहले अंतरिम सरकार में भी शामिल नहीं हुई थी, मगर बाद में शामिल होकर उसके कार्यों में बाधा पहुँचाने लगी।

पता करें –

मंत्रिमंडल की कार्यवाही में बाधा पड़ने से क्या असर पड़ता होगा ?

लीग की सीधी कार्यवाही दिवस –

अब मुस्लिम लीग हर कीमत पर पाकिस्तान चाहने लगी इसलिए उसने 16 अगस्त 1946 ई. को 'सीधी कार्यवाही दिवस' घोषित किया जिसके कारण बंगाल, बिहार, बंबई आदि स्थानों में सांप्रदायिक दंगे भड़क उठे। इन दंगों से हिन्दू–मुस्लिम में भयंकर मारकाट मच गई। इन दंगों को रोकने के लिए अँग्रेजों ने कोई विशेष प्रयास नहीं किया। इस प्रकार कुछ ही महीनों में बहुत से लोग मारे गए और लाखों लोग बेघर हो गए। परंतु इस समय छत्तीसगढ़ में किसी प्रकार का दंगा फसाद नहीं हुआ, क्योंकि यहाँ शांति स्थापित थी जो यहाँ की जनता के भाईचारा का प्रतीक है।

साम्प्रदायिक दंगों से गांधी जी अत्यंत दुखी हुए। उन्होंने दंगाग्रस्त क्षेत्रों का दौरा किया और शांति स्थापना के प्रयास किए।

आपने किसी दंगे की घटना देखी या सुनी होगी। बताइए उससे क्या–क्या हानि होती है ?

माउंटबेटन योजना–

अराजकता के ऐसे वातावरण में मार्च 1947ई. में लार्ड माउंटबेटन नए वायसराय बनकर भारत आए। उन्होंने दोनों सम्प्रदायों के प्रमुख नेताओं से बातचीत की। इसके पश्चात् उन्होंने भारत का विभाजन कर दो स्वतंत्र राष्ट्रों – भारत और पाकिस्तान निर्माण की योजना प्रस्तुत की।

भारत विभाजन –

कॉंग्रेस शुरू से ही भारत की एकता और अखंडता चाहती थी मगर उसने हिंदू–मुस्लिम के आपसी झगड़े का अंत करने के लिए भारत विभाजन को न चाहते हुए भी स्वीकार कर लिया। इस प्रकार पश्चिम पंजाब, पूर्वी बंगाल, सिंध और पश्चिमोत्तर सीमा–प्रांत को मिलाकर पाकिस्तान का पृथक राष्ट्र बना।

अखंड भारत का विभाजन भारतीयों के लिए अत्यंत दुःखद घटना थी। विभाजन के बाद भी विभिन्न स्थानों में हिंदू–मुस्लिम दंगे हुए, विशेषकर पंजाब और बंगाल में। ये दंगे अविश्वास का वातावरण बनाते हैं। इनसे धन और जन की हानि होती है। ये समाज के विकास में बाधक होते हैं। इसलिए विभिन्न धर्मों के लोगों को हमेशा मिलजुलकर रहना चाहिए।

भारत विभाजन से कई आर्थिक समस्याएँ भी पैदा हुईं। जूट और सूती कपड़े के अधिकांश कारखाने भारत में रह गये। मगर जूट और कपास उत्पादन के अधिकांश क्षेत्र पाकिस्तान में चले गये। इससे जूट और सूती कपड़े के कई कारखाने बंद हो गए। गेहूँ चावल और सिंचाई के अधिकांश क्षेत्र पाकिस्तान के क्षेत्र में चले गए इससे कुछ दिनों तक भारत में अन्न का अभाव भी रहा।

शिक्षक से चर्चा करें – सामान्यतः विभाजन से क्या–क्या हानि होती है ?

अ. भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम –

माउंटबेटन योजना के आधार पर भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम इंग्लैंड के संसद द्वारा 18 जुलाई 1947 ई. को पारित किया गया। इसमें व्यवस्था थी कि 15 अगस्त 1947 ई. को भारत और पाकिस्तान दो स्वतंत्र राष्ट्रों का रूप ग्रहण करेंगे। इसके बाद उन पर इंग्लैंड का कोई अधिकार नहीं रहेगा।

स्वतंत्रता की घोषणा –

इस तरह 14 अगस्त की आधी रात के बाद जब 15 अगस्त 1947 ई. की तारीख शुरू हुई। तब पं. जवाहर लाल नेहरू ने भारत के स्वतंत्रता की घोषणा करते हुए कहा– ''भारत में जीवन और स्वतंत्रता का उदय हुआ''। संविधान सभा स्वतंत्र भारत की संसद के रूप में काम करने लगी। हमारे स्वतंत्र भारत के पहले प्रधान मंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू और प्रथम गवर्नर जनरल लार्ड माउंट बेटन बने। पं. जवाहर लाल नेहरू द्वारा 15 अगस्त की सुबह दिल्ली के लाल किले पर स्वतंत्र भारत का तिरंगा झंडा फहराया गया। संपूर्ण देश के साथ–साथ छत्तीसगढ़ के रायपुर में भी तत्कालीन खाद्य मंत्री आर.के.पाटिल ने तिरंगा झंडा फहराया। इस प्रकार नए भारत के निर्माण का कार्य शुरू हो गया।

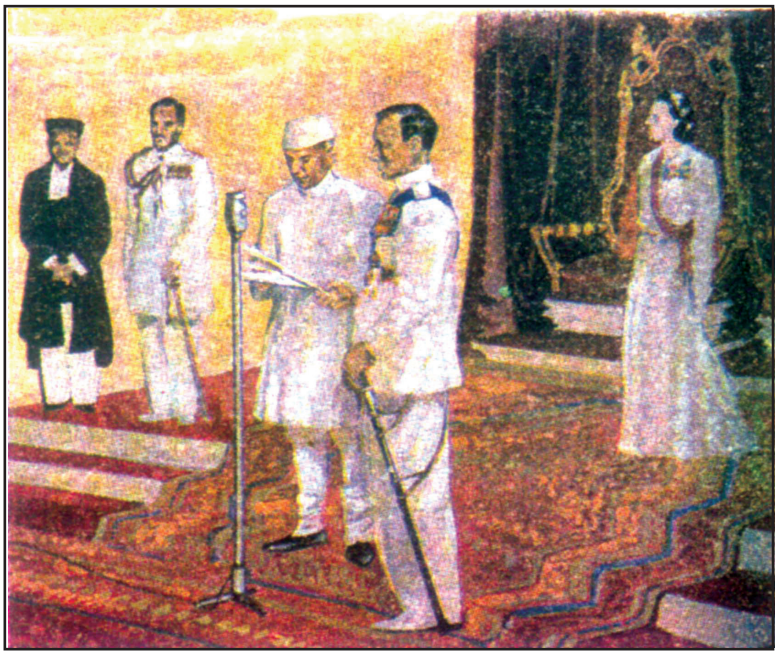

लार्ड माउंट बेटन द्वारा पं. नेहरू को स्वतंत्र भारत के प्रधान मंत्री की शपथ दिलाते हुए

ब. देशी रियासतों–रजवाड़ों का विलय –

स्वतंत्र भारत के सामने कई तात्कालिक कार्य थे। पहला कार्य था देश में राजनीतिक एकता स्थापित करना। 1947 में अँग्रेजों द्वारा सीधे तौर पर शासित होनेवाले इलाकों के अलावा करीब 550 से ज्यादा स्वतंत्र देशी रियासतें थीं, जहाँ अँग्रेजों का शासन नहीं था। स्वतंत्रता की घोषणा के समय यह व्यवस्था हुई थी कि इंग्लैंड से भारत के स्वतंत्र होने के साथ–साथ सभी देशी रियासतें भी स्वतंत्र हो जाएंगी। यह निर्णय इनके हाथ में था कि ये स्वतंत्र रहेंगी अथवा भारत या पाकिस्तान में से किसी एक के साथ रहेंगी। लेकिन इन रियासतों के स्वतंत्र बने रहने से भारत की एकता एवं सुरक्षा खतरे में पड़ जाती। इसलिए देशी रियासतों के विलय का कार्य तत्कालीन गृह मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल को सौंपा गया। सरदार पटेल छत्तीसगढ़ के रियासतों के विलय हेतु दिसंबर 1947 ई. में नागपुर भी आए। उनके समझाए जाने से यहाँ के कुल 14 रियासतों का भारत में विलय हो गया। कवर्धा, सक्ती एवं छुईखदान का विलय वहाँ के जन आंदोलन के बाद हुआ। इस प्रकार सरदार पटेल की सूझबूझ के कारण भारत की कुल 562 देशी रियासतों में से अधिकांश रियासतों ने स्वतंत्रता पूर्व ही भारत में विलय स्वीकार कर लिया था। इसी सूझबूझ के कारण उन्हें 'लौह पुरुष' कहा जाता है। अब उनके सामने जूनागढ़, कश्मीर और हैदराबाद का विलय शेष था।

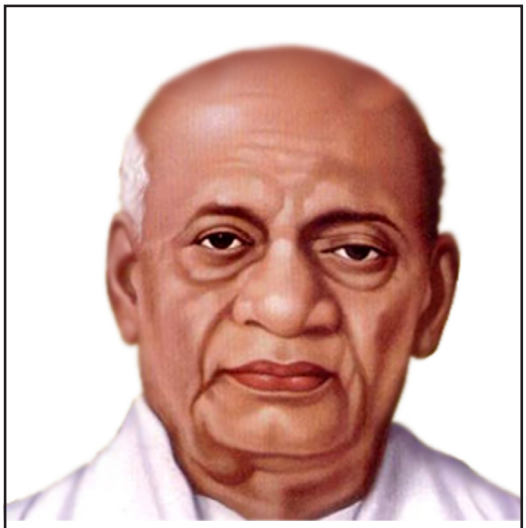

सरदार वल्लभ भाई पटेल

1. जूनागढ़ का विलय –

जूनागढ़ सौराष्ट्र की एक छोटी–सी रियासत थी। वहाँ का नवाब पाकिस्तान में शामिल होना चाहता था। परंतु जूनागढ़ की जनता भारत में शामिल होना चाहती थी। अतः जनता के दबाव के कारण नवाब पाकिस्तान भाग गया। इस प्रकार फरवरी 1948ई. में जूनागढ़ भारत में विलीन हो गया।

2. कश्मीर का विलय –

कश्मीर रियासत के राजा हरिसिंह ने स्वतंत्र रहने का निर्णय लिया था परंतु वहाँ की जनता शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में भारत में विलय की माँग कर रही थी। जब स्वतंत्रता के तुरंत बाद पाकिस्तान के प्रोत्साहन से सशस्त्र घुसपैठियों ने कश्मीर पर आक्रमण किया। तब राजा हरिसिंह ने कश्मीर के भारत में विलय के समझौते पर हस्ताक्षर कर दिए। फिर भारतीय सैनिकों की मदद से उन घुसपैठियों को कश्मीर से खदेड़ दिया गया।

3. हैदराबाद का विलय –

हैदराबाद का निजाम पाकिस्तान के बहकावे में आकर स्वतंत्र ही रहना चाहता था। परंतु वहाँ की जनता स्वामी रामानंद तीर्थ के नेतृत्व में हैदराबाद का भारत में विलय की माँग कर रही थी। इनकी माँग को दबाने के लिए निजाम द्वारा उन पर अनेक अत्याचार किये गये। अंततः भारतीय सैनिकों द्वारा निजाम के विरुद्ध कार्यवाही शुरू की गई और हैदराबाद रियासत भारत में विलीन हो गई।

अपने शिक्षक से चर्चा करें कि एकता से क्या क्या लाभ है ?

स. नए संविधान का निर्माण –

डॉ. भीम राव अम्बेडकर

इस बीच संविधान प्रारूप समिति के अध्यक्ष डॉ. भीमराव अम्बेडकर द्वारा स्वतंत्र भारत के लिए नए संविधान के प्रारूप बनाने का कार्य 26 नवम्बर 1949 ई. को अंतिम रूप प्रदान किया गया। मगर इसे 26 जनवरी 1950ई. को लागू किया गया। इस प्रकार भारत एक सम्पूर्ण प्रभुत्वसंपन्न गणतंत्र राष्ट्र बन गया। इसलिए तब से यह दिन गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है।

राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान भारतीयों ने स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व, मानवता तथा लोकतंत्र के राष्ट्रीय मूल्यों को स्वीकार किया था। इन्हें हमारे संविधान में महत्व दिया गया। हमारे संविधान में भारत के सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर नियमों का संकलन किया गया, जिसके अनुसार शासन चलाया जाता है।

हमारे संविधान की अन्य विशेषताओं के बारे में आप नागरिक शास्त्र खंड में विस्तार से पढ़ेंगे।

अभ्यास प्रश्न

PSHUSA

1. खाली स्थान को भरिए –

1. सत्ता हस्तांतरण संबंधी तीन ब्रिटिश मंत्रियों की समिति को .....कहा गया हैं।
2. केन्द्र में अंतरिम सरकार का गठन ..... के नेतृत्व में हुआ था।
3. संविधान सभा (संविधान निर्मात्री समिति) के अध्यक्ष ..... थे।
4. संविधान प्रारूप समिति के अध्यक्ष ..... थे।
5. भारत की स्वतंत्रता के समय इंग्लैंड के प्रधान मंत्री ..... थे।
6. ब्रिटिश भारत के अंतिम वायसराय ..... थे।

7. स्वतंत्र भारत के प्रथम गवर्नर जनरल ..... थे।

8. स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री ..... थे।

9. .....को भारत का लौह पुरुष कहा जाता है।

2. सुमेलित कीजिए –

क. सीधी कार्यवाही दिवस	–	26 नवम्बर 1949
ख. स्वतंत्रता दिवस	–	16 अगस्त 1946
ग. संविधान के प्रारूप को अंतिम रूप	–	26 जनवरी 1950
घ. गणतंत्र दिवस	–	15 अगस्त 1947

3. तिथियों के योजनाओं को उचित क्रम में लिखिए –

माउंटबेटन योजना, केबिनेट मिशन योजना, भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम

4. प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. केबिनेट मिशन क्या है ?
2. अंतरिम सरकार की स्थापना कैसे हुई ?
3. माउंटबेटन योजना क्या है ?
4. भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम क्या है ?
5. देशी रियासतों का विलय क्यों किया गया?
6. भारतीय गणतंत्र की स्थापना किन परिस्थितियों में हुई ?

5. टिप्पणी लिखिए –

क. लीग की सीधी कार्यवाही ।

ख. भारत विभाजन ।

ग. भारतीय संविधान का निर्माण ।